९ जुलाई, १९८७ नवभारत टाइम्स, बम्बई

राष्ट्रपति चुने जाने पर पद की गरिमा बनाए रखूंगा व देश की सेवा करूंगा : वेंकटरामन

। आलोक मेहता ।

नई दिल्ली, ९ जुलाई। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार श्री आर. वेंकटरामन के अनुसार जीवन में सफलता का मूल मन्त्र है वर्तमान में जीना और बीत कल या भविष्य की चिन्ता नहीं करना। वे कहते हैं, 'इसी आदर्श के कारण मुझे जो जिम्मेदारी मिली, मैंने उसे पूरी करने के लिए हर सम्भव प्रयास किए और राष्ट्रपति चुने जाने पर भी पद की गरिमा बनाए रखने और देश की सेवा के लिए पूरी कोशिश करता रहूंगा।'

श्री वेंकटरामन ने कल संवाददाता के साथ करीब ४५ मिनट की बातचीत में बहुत सहज ढंग से अपने जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय स्थितियों पर अपनी मान्यताओं तथा अनुभवों की जानकारी दी।

श्री वेंकटरामन मानते हैं, 'मैं किसी पद के लिए कभी लालायित नहीं रहा। लेकिन जब श्री राजीव गांधी अपने सहयोगियों के साथ देश के सर्वोच्च पद के लिए कांग्रेस उम्मीदवार बनाए जाने के निर्णय की सूचना देकर आए, तो मुझे प्रसन्नता हुई। कांग्रेस के तथाकथित असंतुष्ट नेताओं ने भी स्वयं आकर अपने समर्थन की बात की। वे यह भी मानते हैं कि पिछले दिनों चर्चित राजनीतिक संकट का दौर अब अधिक नहीं चलेगा। स्थिति सुधरेगी।

स्वभावतः श्री वेंकटरामन ने राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री के सम्बन्धों को लेकर हाल में उत्पन्न विवादों की चर्चा नहीं की, लेकिन उनके भावी इरादों के बारे में पूछे जाने पर कहा कि 'राष्ट्रपति चुने जाने पर मैं अपनी प्रजातान्त्रिक परम्पराओं के अनुरूप प्रधानमन्त्री के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने की पूरी कोशिश करूंगा। मैं यह मानता हूं कि प्रजातन्त्र में सत्ता का केन्द्र केवल एक होना चाहिए। जनता द्वारा चुने गए प्रधानमन्त्री का जनता से सीधा सम्पर्क रहना चाहिए और राष्ट्रपति को हमारी संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार मन्त्रिमण्डल की सलाह पर अपना दायित्व निभाना चाहिए।'

गांधीवादी और धार्मिक प्रवृत्ति वाले श्री वेंकटरामन मानते हैं, धर्मनिरपेक्षता का मतलब धर्म विरोधी होना कतई नहीं है। उन्होंने कहा, 'हां, मैं मंदिर में प्रार्थना करता

बोलते समय कुछ दिक्कत हुई थी। सामने दस लाख श्रोता और सीधे टी.वी. प्रसारण से करोड़ों तक पहुंचने का अवसर। लेकिन जब भाषण समाप्त हुआ, तो स्वयं को आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई।'

श्री वेंकटरामन के अनुसार 'दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के प्रति कोई विरोध या द्वेष नहीं है। जैसे आप रामेश्वरम मंदिर जाएं, तो शायद तमिल बोलने पर कठिनाई हो, लेकिन हिन्दी सब आसानी से बोलते और समझते हैं। असल में दक्षिण में केवल राजनीतिज्ञों ने अपने स्वार्थों के लिए भाषा के विवाद खड़े किए। वो मैं यह अवश्य मानता हूं कि राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए दक्षिण में हिन्दी और उत्तर भारत में दक्षिण भारतीय भाषाओं को पढ़ने-पढ़ाने की अधिक से अधिक सुविधाएं जुटाई जाएं।' डा. उनकी पत्नी श्रीमती जानकी वेंकटरामन बहुत अच्छी हिन्दी बोलती हैं।